भोपाल-जंबूरी मैदान में जनजातीय गौरव दिवस पर, PM मोदी जी का संबोधन...
दिनांक 15/11/2021

जोहार मध्य प्रदेश... राम राम.. सेवा जोहार.. मोर सगा.. जनजाति बहन भाई का स्वागत जोहार करता हूं, तमारो स्वागत करूं, तमाम शाम किकम्चो मल्थना आपस भनसो मिलन बड़ी खुशी हुई रहली है, आप सभन्थन फिरसी राम राम.., मध्य प्रदेश के राज्यपाल श्री मंगू भाई पटेल जिन्होंने अपना पूरा जीवन आदिवासियों के कल्याण के लिए खपा दिया, वह जीवन भर आदिवासियों के जीवन के लिए सामाजिक संगठन के रूप में, सरकार में मंत्री के रूप में एक समर्पित आदिवासियों के सेवक के रूप में रहे, मुझे गर्व है कि मध्य प्रदेश के पहले आदिवासी गवर्नर इसका सम्मान श्री मंगू भाई पटेल के खाते में जाता है | मंच पर विराजमान मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्रीमान शिवराज सिंह चौहान जी, केंद्रीय मंत्रीमंडल में मेरे सहयोगी नरेंद्र सिंह तोमर जी, ज्योतिरादित्य सिंधिया जी, वीरेंद्र कुमार जी, प्रह्लाद पटेल जी, फग्गन सिंह कुलस्ते जी, एल मुरूगन जी, एमपी सरकार के मंत्री गण, संसद के सहयोगी मेरे सांसद गण, विधायक गण और मध्य प्रदेश के कोने-कोने से हम सभी को आशीर्वाद देने आए जनजातीय समाज के मेरे प्यारे भाइयों और बहनों, आप सभी को भगवान बिरसा मुंडा के जन्मदिन पर बहुत-बहुत शुभकामनाएं |

आज का दिन पूरे देश के लिए पूरे जनजातीय समाज के लिए बहुत बड़ा दिन है | आज भारत अपना पहला जनजातीय गौरव दिवस मना रहा, आजादी के बाद देश में पहली बार इतने बड़े पैमाने पर पूरे देश के जनजातीय समाज की कला संस्कृति, स्वतंत्रता आंदोलन और राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान को गौरव के साथ याद किया जा रहा है | आजादी के अमृत महोत्सव में इस नए संकल्प के लिए मैं पूरे देश को बहुत-बहुत बधाई देता हूं | मैं आज यहां मध्य प्रदेश के जनजातीय समाज का आभार भी व्यक्त करता हूं, बीते अनेक वर्षों में निरंतर हमें आपका स्नेह, आपका विश्वास मिला है, यह हर पल और मजबूत होता जा रहा है, आपका यही प्यार हमें

आपकी सेवा के लिए दिन-रात एक करने के लिए प्रेरणा देता है | ऊर्जा देता है, साथियों के सेवा भाव से ही आज आदिवासी समाज के लिए शिवराज जी की सरकार ने कई बड़ी योजनाओं का शुभारंभ किया है | आज जब कार्यक्रम के प्रारंभ में मेरे आदिवासी जनजाति समूह के सभी लोग अलग-अलग मंच पर गीत के साथ, धुन के साथ, अपनी भावनाएं प्रकट कर रहे हैं, मैंने प्रयास किया उन गीतों को समझने के लिए क्योंकि मेरा यह अनुभव रहा है कि जीवन का एक महत्वपूर्ण कालखंड मैंने आदिवासियों के बीच में बिताया है और मैंने देखा है, क्योंकि हर बात में कोई न कोई तत्वज्ञान होता हैं, पर पर्ज ऑफ लाइफ, आदिवासी अपने नाच गान में, अपने गीतों में, अपनी परंपराओं में बखूबी प्रस्तुत करते है | इसलिए आज के इस गीत के प्रति मेरा ध्यान जाना बहुत स्वाभाविक था, मैंने जब गीत के शब्दों को बारीकी से देखा तो मैं गीत को तो नहीं दोहरा रहा हूं लेकिन आपने जो कहा शायद देशभर के लोगों को आपका एक-एक शब्द जीवन जीने का कारण, जीवन जीने का इरादा जीवन जीने के हेतु बखूबी प्रस्तुत करता है, आपने अपने नृत्य के द्वारा अपने गीत के द्वारा आज प्रस्तुत किया | शरीर चार चीजों का है, अंत में मिट्टी में मिल जाएगा, खाना पीना खूब किया, भगवान का नाम भुलाया | देखिए यह आदिवासी हमें क्या कह रहे हैं, जी सचमुच में वह शिक्षित है, हमें अभी सीखना बाकी है | आगे कहते हैं, मौज मस्ती में उम्र बिता दी, जीवन सफल नहीं किया, अपने जीवन में लड़ाई-झगड़ा खूब किया, घर में उत्पाद भी खूब किया, जब अंत समय आया तो मन में पछताना व्यर्थ है, धरती, खेत, खलियान किसी के नहीं है | देखिए आदिवासी मुझे क्या समझा रहा है, धरती, खेत, खलिहान किसी के नहीं है, अपने मन में गुमान करना व्यर्थ है, यह धन-दौलत कोई काम के नहीं है, इसे यही छोड़कर जाना है | आप देखिए संगीत में इस नृत्य में जो शब्द कहे गए हैं, वह जीवन का उत्तम तत्वज्ञान जंगलों में जिंदगी गुजारने वाले मेरे आदिवासी बहनों और भाइयों ने आत्मसात किया है | इससे बड़ी किसी देश की ताकत क्या हो सकती है, इससे बड़ी किसी देश की विरासत क्या हो सकती है, इससे बड़ी देश की पूंजी क्या हो सकती है, साथियों ऐसे सेवा भाव से ही आज आदिवासी समाज के लिए शिवराज जी की सरकार ने कई बड़ी योजनाओं का

शुभारंभ किया है,राशन आपके ग्राम योजना हो या फिर मध्य प्रदेश सिकलसेल मिशन हो, दोनों कार्यक्रम आदिवासी समाज में स्वास्थ्य और पोषण को बेहतर बनाने में अहम भूमिका निभाएंगे | मुझे इसका भी संतोष है, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के तहत मुफ्त राशन मिलने से कोरोना काल में गरीब आदिवासी परिवारों को इतनी बड़ी मदद मिली,अब जब गांव में आपके घर के पास सस्ता राशन पहुंचेगा तो आपका समय भी बचेगा और अतिरिक्त खर्च से भी मुक्ति मिलेगी|

आयुष्मान भारत योजना से पहले ही अनेक बीमारियों का मुफ्त इलाज आदिवासी समाज को मिल रहा, देश के गरीबों को मिल रहा है | मुझे खुशी है कि मध्य प्रदेश में जनजातीय परिवारों में तेजी से मुफ्त टीकाकरण भी हो रहा है | दुनिया के पढ़े-लिखे देशों में भी टीकाकरण को लेकर सवालिया निशान लगाने की खबरें आती है, लेकिन मेरा आदिवासी भाई-बहन टीकाकरण के महत्व को समझता भी है, स्वीकारता भी है, और देश को बचाने में अपनी भूमिका अदा कर रहा है, इससे बड़ी समझदारी क्या हो सकती है, 100 साल की सबसे बड़ी महामारी से सारी दुनिया लड़ रही है, सबसे बड़ी महामारी से निपटने के लिए जनजातीय समाज के सभी साथियों का वैक्सीनेशन के लिए आगे बढ़कर आना सचमुच में अपने आप में गौरवपूर्ण घटना है, पढ़े-लिखे शहरों में रहने वाले लोगों को मेरे इन आदिवासी भाइयों से बहुत कुछ सीखने जैसा है |

साथियों आज यहाँ भोपाल आने से पहले मुझे रांची में झारखंड में भगवान बिरसा मुंडा स्वतंत्रता सेनानी म्युजियम का लोकार्पण करने का सौभाग्य मिला है | आजादी की लड़ाई में जनजातीय नायक-नायिकाओं की वीर गाथा को देश के सामने लाना, उसे नई पीढ़ी से परिचित कराना हमारा कर्तव्य है | गुलामी के कालखंड में विदेशी शासन के खिलाफ खासी गारो आंदोलन, मिजो आंदोलन, कोल आंदोलन समेत कई संग्राम हुए, गोंड महारानी वीर दुर्गावती का शौर्य हो या फिर रानी कमलापति का बलिदान, देश इन्हें भूल नहीं सकता है | वीर महाराणा प्रताप के संघर्ष की कल्पना उन बहादुर वीरों के बिना नहीं की जा सकती जिन्होंने कंधे से

कंधा मिलाकर राणा प्रताप के साथ लड़ाई के मैदान में अपने आप को बलि चढ़ा दिया था, हम सभी इनके ऋणी है | हम सभी इस ऋण को कभी चुका नहीं सकते | लेकिन अपनी विरासत को संजो कर, उसे उचित स्थान देकर, अपना दायित्व जरूर निभा सकते हैं |

भाइयों और बहनों आज जब मैं आपसे अपनी विरासत को संजोने की बात कर रहा हूं तो देश के प्रख्यात इतिहासकार, बाबा साहेब पुरंदरे जी को भी याद करूंगा | आज ही सुबह पता चला वह हमें छोड़ कर चले गए, उनका देहावसान, पद्म विभूषण बाबासाहेब पुरंदरे जी ने छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन को, उनके इतिहास को सामान्य जन तक पहुंचाने में जो योगदान दिया है, वह अमूल्य है | यहां की सरकार ने उन्हें कालिदास पुरस्कार भी दिया था, छत्रपति शिवाजी महाराज के जिन आदर्शों को बाबासाहेब पुरंदरे जी ने देश के सामने रखा, वह आदर्श हमें निरंतर प्रेरणा देते रहेंगे | मैं बाबा साहब पुरंदरे जी को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि देता हूं |

साथियों आज जब हम राष्ट्रीय मंच से राष्ट्र निर्माण में जनजातीय समाज के योगदान की चर्चा करते हैं तो कुछ लोगों को जरा हैरानी होती है, ऐसे लोगों को विश्वास ही नहीं होता कि जनजातीय समाज का भारत की संस्कृति को मजबूत करने में कितना बड़ा योगदान रहा है | इसकी वजह यह है कि जनजातीय समाज के योगदान के बारे में ये तो देश को बताया ही नहीं गया, अंधेरे में रखने की भरपूर कोशिश की गई | और अगर बताया भी गया तो बहुत ही सीमित दायरे में जानकारी दी गई, ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि आजादी के बाद दशकों तक जिन्होंने देश में सरकार चलाई उन्होंने अपने स्वार्थ भरी राजनीति को ही प्राथमिकता दी, देश की आबादी का करीब-करीब 10% होने के बावजूद दशकों तक जनजातीय समाज को, उनकी संस्कृति, उनके सामर्थ्य को पूरी तरह नजरअंदाज कर दिया गया | आदिवासियों का दुख, उनकी तकलीफ, बच्चों की शिक्षा, उन लोगों के लिए कोई मायने नहीं रखता था | साथियों भारत की सांस्कृतिक यात्रा में जनजातीय समाज

का योगदान अटूट रहा है, आप ही बताइए जनजातीय समाज के योगदान के बिना क्या प्रभु राम के जीवन में सफलताओं की कल्पना की जा सकती है, बिल्कुल नहीं | वनवासियों के साथ बिताए गए समय ने एक राजकुमार को मर्यादा पुरुषोत्तम राम बनाने में अहम योगदान दिया है, बनवास के उसी कालखंड में प्रभु राम ने वनवासी समाज की परंपरा रिति-रिवाज, रहन-सहन के तौर तरीके जीवन के हर पहलू से प्रेरणा पाई थी | साथियों आदिवासी समाज को उचित महत्व न देकर, प्राथमिकता न देकर, पहले की सरकारों ने जो अपराध किया है उस पर लगातार बोला जाना आवश्यक है, हर मंच पर चर्चा होना जरूरी है | जब दशकों पहले मैंने गुजरात में अपने सार्वजनिक जीवन की शुरुआत की थी, तभी से मैं देखता आया हूं कि कैसे देश में कुछ राजनीतिक दलों ने सुख-सुविधा और विकास के हर संसाधन से आदिवासी समाज को वंचित रखा | अभाव बनाए रखते हुए, चुनाव के दौरान उन्हें भावों की पूर्ति के नाम पर बार-बार वोट मांगे गए, सत्ता पाई गई, लेकिन जनजातीय समुदाय के लिए जो करना चाहिए था, जितना करना चाहिए था, और जब करना चाहिए था, यह कम पड़ गए |

गुजरात का मुख्यमंत्री बनने के बाद मैंने वहाँ पर जनजाति समाज में स्थितियों को बदलने के लिए बहुत सारे अभियान शुरू किए | जब देश ने मुझे 2014 में आप सब देशवासियों की सेवा का मौका दिया तो मैंने जनजातीय समुदाय के हितों को अपनी सर्वोच्च प्राथमिकता में रखा | भाइयों और बहनों आज सही मायने में आदिवासी समाज के हर साथी को देश के विकास में उचित हिस्सेदारी और भागीदारी दी जा रही है, आज चाहे गरीबों के घर हो, शौचालय हो, मुफ्त बिजली और गैस कनेक्शन हो, स्कूल हो, सड़क हो, मुफ्त इलाज हो, यह सब कुछ जिस गति से देश के बाकी हिस्सों से हो रहा है उसी गति से आदिवासी क्षेत्रों में भी हो रहा है | बाकी देश के किसानों के बैंक खाते में अगर हजारों करोड़ रुपए सीधे पहुंच रहे हैं, तो आदिवासी क्षेत्रों के किसानों को भी उसी समय मिल रहे हैं, आज अगर देश के करोड़ों परिवारों को शुद्ध पीने का पानी पाइप से घर-घर पहुंचाया जा रहा है तो यह उसी इच्छाशक्ति के साथ उतनी ही स्पीड से आदिवासी परिवारों तक

भी पहुंचाने का काम तेज गति से चल रहा है, वरना इतने वर्षों तक जनजातीय क्षेत्रों की बहन-बेटियों को पानी के लिए कितना परेशान होना पड़ता था, मुझसे ज्यादा आप लोग इस को भली-भांति जानते हैं | मुझे खुशी है कि जल जीवन मिशन के तहत मध्य प्रदेश के ग्रामीण इलाकों में 30 लाख परिवारों को अब नल से जल मिलना शुरू हो गया है, इसमें भी ज्यादातर हमारे आदिवासी इलाकों के हैं |

साथियों जनजातीय विकास के बारे में बात करते हुए एक बात और कही जाती थी, कहा जाता था जनजातीय क्षेत्र बाहुल बहुत कठिन होते हैं, कहा जाता था वहां सुविधाएँ पहुँचाना बहुत मुश्किल होता है, यह सारा बहाना काम न करने के बहाने थे | यही बहाना करके जनजातीय समाज में सुविधाओं को कभी प्राथमिकता नहीं दी गई, उनको अपने भाग्य पर छोड़ दिया गया, साथियों ऐसी ही राजनीति, ऐसे ही सोच के कारण आदिवासी बाहुल्य वाले जिले विकास की बुनियादी सुविधाओं से भी वंचित रह गए, अब कहाँ तो उनके विकास के लिए कोशिशें होनी चाहिए थी, लेकिन इन जिलों पर पिछड़े होने का एक टैग लगा दिया गया | भाइयों और बहनों कोई राज्य है, कोई जिला, कोई व्यक्ति, कोई समाज, विकास की दौड़ में पीछे नहीं रहना चाहिए | हर व्यक्ति हर समाज आकांक्षी होता है, उसके सपने होते हैं | इन्हीं सपनों, इन्हीं आकांक्षाओं को उड़ान देने की कोशिश आज हमारी सरकार की प्राथमिकता है | आज उन 100 से अधिक जिलों में विकास की आकांक्षाओं को पूरा किया जा रहा है |

आज जितनी भी कल्याणकारी योजनाएं केंद्र सरकार बना रही है, उनमें आदिवासी समाज बाहुल्य आकांक्षी जिलों को प्राथमिकता दी जा रही है | आकांक्षी जिले या फिर ऐसे जिले जहां अस्पतालों का अभाव है, वहां डेढ़ सौ से अधिक मेडिकल कॉलेज स्वीकृत किए जा चुके हैं | साथियों देश का जनजातीय क्षेत्र संसाधनों के रूप में, संपदा के मामले में हमेशा समृद्धि रहा है, लेकिन जो पहले सरकार में रहे वहीं क्षेत्रों के दोहन की नीति पर चले | हम इन क्षेत्रों के सामर्थ्य के सही इस्तेमाल की नीति पर चल रहे हैं, आज जिस जिले में जो भी प्राकृतिक संपदा

राष्ट्र के विकास के लिए निकलती है उसका एक हिस्सा उसी जिले के विकास में लगाया जा रहा है |

डिस्ट्रिक मिनरल फंड के तहत राज्यों को करीब-करीब 50000 करोड़ रुपए मिले हैं जो उसी क्षेत्र के लिए खर्च करने हैं | आज आपकी संपदा आपके ही काम आ रही है, आपके बच्चों के काम आ रही है, अब तो खनन से जुड़ी नीतियों में भी हमने ऐसे बदलाव किए हैं जिससे जनजातीय क्षेत्रों में ही रोजगार की व्यापक संभावनाएं बनी |

भाइयों और बहनों, आजादी का यह अमृत काल आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का काल है | भारत की आत्मनिर्भरता जनजातियां भागीदारी के बिना संभव नहीं है, आपने देखा होगा अभी हाल में पद्म पुरस्कार दिए गए हैं, जनजातीय समाज से आने वाले जब राष्ट्रपति भवन पहुंचे पैर में जूते भी नहीं थे, सारी दुनिया देख दंग रह गई, हैरान रह गई | आदिवासी और ग्रामीण समाज में काम करने वाले यह देश के यह असली हीरो हैं, असली हीरो यही तो हमारे डायमंड हैं, यही तो हमारे हीरो हैं |

भाइयों और बहनों, जनजातीय समाज में प्रतिभा की कभी कोई कमी नहीं रही है लेकिन दुर्भाग्य से पहले की सरकारों में आदिवासी समाज को अवसर देने के लिए जो जरूरी राजनीतिक इच्छाशक्ति चाहिए न वह बहुत कम थी, सृजन आदिवासी परंपरा का हिस्सा है, मैं अभी यहां आने से पहले सभी आदिवासी समाज की बहनों के द्वारा जो निर्माण कार्य हुआ है वह देख करके सचमुच में मेरे मन को आनंद होता था, इनकी उंगलियों में क्या ताकत है, सृजन आदिवासी परंपरा का हिस्सा है लेकिन आदिवासी सृजन को बाजार से नहीं जोड़ा गया है | आप कल्पना कर सकते हैं बाँस की खेती जैसे छोटी और सामान्य सी चीज को कानूनों के मकड़जाल में फंसा कर रखा गया था, क्या हमारे जनजातीय भाइयों-बहनों को हक नहीं था कि वो बाँस की खेती कर बाँस को बेच के पैसा कमा सकें, हमने वन कानूनों में बदलाव कर इस सोच को ही बदल दिया |

साथियों, दशकों से जिस समाज को उसकी छोटी-छोटी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए लंबा इंतजार करवाया गया, उसकी अपेक्षा की गई, अब उसको आत्मनिर्भर बनाने के लिए निरंतर प्रयास किया जा रहा है | लकड़ी और पत्थर की कलाकारी तो आदिवासी समाज सदियों से कर रहा है, लेकिन अब उनके बनाए उत्पादों को नया मार्केट उपलब्ध कराया जा रहा | पोर्टल के माध्यम से जनजातीय कलाकारों के उत्पाद देश और दुनिया के बाजारों में ऑनलाइन भी बिक रहे हैं | जिस मोटे अनाज को कभी दोयम नजर से देखा जाता था वह भी आज भारत का प्राण बन रहा है |

साथियों, वन धन योजना हो, वनोपज को एमएसपी के दायरे में लाना हो या बहनों की संगठन शक्ति को नई ऊर्जा देना, यह जनजातीय क्षेत्रों में अभूतपूर्व अवसर पैदा कर रहे हैं | पहले की सरकारें सिर्फ आज 8,10 वनोपज पर एमएसपी दिया करती थी, आज हमारी सरकार करीब-करीब 90 वनोपज पर एमएसपी दे रही है , कहां 9,10 और कहां 90, हमने 25 सौ से अधिक वन धन विकास केंद्रों को 37000 से अधिक वन धन सेल्फ हेल्प ग्रुप से जोड़ा है, इनसे आज लगभग साढ़े 7 लाख साथी जुड़े हैं, उनको रोजगार और स्वरोजगार मिल रहा है, हमारी सरकार ने जंगल की जमीन को लेकर भी पूरी संवेदनशीलता के साथ कदम उठाए हैं, राज्यों में लगभग 2000000 जमीन के पट्टे देकर हमने लाखो जनजातीय साथियों की बहुत बड़ी चिंता दूर की है |

भाइयों और बहनों, हमारी सरकार आदिवासी युवाओं की शिक्षा और कौशल पर विशेष बल दे रही है, एकलव्य मॉडल रेजिडेंशियल स्कूल आज जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा की नई ज्योति जागृत कर रही है | आज मुझे यहां 50 एकलव्य मॉडल रेजिडेंशियल स्कूलों के शिलान्यास का अवसर मिला है | हमारा लक्ष्य देशभर में ऐसे लगभग साढ़े 7 सौ स्कूल खोलने का है, इनमें से अनेकों एकलव्य स्कूल ऑलरेडी शुरू हो चुके हैं | 7 साल पहले हर छात्र पर सरकार लगभग ?40000 खर्च करती थी, वह आज बढ़कर ?100000 से अधिक हो चुका है | इससे जनजातीय छात्र-छात्राओं

को और अधिक सुविधा मिल रही है | केंद्र सरकार हर साल लगभग 30 लाख जनजातीय युवाओं को स्कॉलरशिप भी दे रही है | जनजातीय युवाओं को उच्च शिक्षा और रिसर्च से जोड़ने के लिए भी अभूतपूर्व काम किया जा रहा है | आजादी के बाद जहां सिर्फ अट्ठारह ट्राईबल रिसर्च इंस्टीट्यूट बने वही सिर्फ 7 साल में 9 नए संस्थान स्थापित किए जा चुके हैं | साथियों जनजातीय समाज के बच्चों को एक बहुत बड़ी दिक्कत पढ़ाई के समय भाषा की भी होती थी | अब नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्थानीय भाषा में पढ़ाई पर बहुत जोर दिया गया है, इसका भी लाभ हमारे जनजातीय समाज के बच्चों को मिलना तय है |

भाइयों और बहनों, जनजातीय समाज का प्रयास, सब का प्रयास, यही आजादी के अमृत काल में बुलंद भारत के निर्माण की ऊर्जा है | जनजातीय समाज के आत्मसम्मान के लिए आत्मविश्वास के लिए, अधिकार के लिए, हम दिन-रात मेहनत करेंगे | आज जनजातीय गौरव दिवस पर हम इस संकल्प को फिर दोहरा रहे हैं, और यह जनजातीय गौरव दिवस जैसे हम गांधी जयंती मनाते हैं, जैसे हम सरदार पटेल की जयंती मनाते हैं, जैसे बाबा साहब अंबेडकर की जयंती मनाते हैं, वैसे ही भगवान बिरसा मुंडा की 15 नवंबर की जयंती हर वर्ष जनजातीय गौरव दिवस के रूप में पूरे देश में मनाई जाएगी, एक बार फिर आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं | मेरे साथ दोनों हाथ ऊपर करके बोलिए भारत माता की..... जय..... बहुत-बहुत धन्यवाद |